THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

परमेश्वर* के उच्च कानून द्वारा मुक्ति

Set free by the higher law of God

Author – Jill Gooding

Christian Science Sentinel Vol 110, No. 8, 25 February, 2008

हमारे आस पास अन्याय के कई उदाहरण हैं– लोगों पर लगे उन कार्यों के आरोप जो उन्होंने नहीं किए, उन में से कुछ अन्याय से बन्दी बने तथा कैद में डाले गए, तथा वे बदनाम हुए। कई इस तरह से अन्यायों को अनुभव कर चुके हैं या वर्तमान में कर रहे हैं। समुदायों या राष्ट्रों के कई भागों के साथ भी अन्यायपूर्वक व्यवहार किया जाता है, जैसे उदाहरण के तौर पर, डार्फर में जहाँ पर तीन सालों से भी अधिक लंबी लडाई ने सौ से अधिक गांवों को नष्ट कर दिया तथा 22 लाख लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ा। वहाँ मानवीय अधिकारों के उल्लंघन की विस्तृत जानकारी के बावजूद परिस्थिति को ठीक करने के प्रयत्नों से बहुत कम या अपर्याप्त परिणाम मिले हैं।

अन्याय नया नहीं है। इतिहास में ऐसा प्रतीत होता है, कि निर्दोष ही कष्ट पाते हैं। बाइबल यहाँ दर्शाती है कि हज़ारों वर्ष पहले, वे लोग जिन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया, उन पर झूठे आरोप लगाए गए। डेनियल को अच्छाई के परमेश्वर की उपासना करने के कारण शेरों की मांद में फेंक दिया गया। उसी कारण तीन यहूदी शैडरैक, मिशैक तथा ऐबेडनेगो को दहकती आग की भट्ठी में फेंक दिया गया। जोसेफ ने पवित्र तथा सरल जीवन जिया, फिर भी उसे कैद में उस अपराध के लिए डाला गया जो उसने नहीं किया था। और शायद सभी अन्यायों में से सबसे बड़े अन्याय की व्याख्या करें तो, जीस्स जिसने जनसमूह का उपचार तथा उन्हें आशीषित किया, उसे शर्मिंदगी के साथ तथा सार्वजनिक ढ़ंग से सूली पर चढ़ा दिया। उन व्यक्तियों के अनुभवों में से कोई भी आनन्दायक नहीं था, फिर भी परमेश्वर की शक्ति तथा कृपा से हर एक का परिणाम मुक्ति तथा विजय था।

ऐसी अवस्थाओं में लोग सदा प्रलोभित होते हैं यह पूछने में कि, "मैं ही क्यों? मैं ने क्या गलत किया है?" शायद और भी सही प्रश्न होना चाहिए : "मैं ने क्या उचित किया है?" और इससे भी ऊँचा न्याय का एक कानून है जो कि अन्याय के इन आरोपों को मिटा सकता है–परमेश्वर का उच्च कानून। जैसे बाइबल कहती है, "क्या सारी धरती के न्यायाधीश को सब उचित नहीं करना चाहिए?" (उत्पत्ति 18:25) हम सबका माता–पिता इन अनुभवों से अपने बच्चों की सुरक्षा करता है। परीक्षा की घड़ी परमेश्वर की सुरक्षा के निश्चित प्रमाणों की ओर अकसर मार्गदर्शन करती है, न केवल उनके लिए आशीष लाती है जो इससे संबंधित हैं, अपितु विस्तृत समुदाय के लिए भी।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

अन्याय गलत मानसिक प्रवृतियों तथा गलत धारणाओं से उत्त्पन्न होता है। इनमें ईर्ष्या, द्वेष, व्यक्तित्व की झूठी समझ, महत्वाकांक्षा, झूठ, सत्य के प्रति घृणा, गलत निर्णय लेना, गलतफहमी तथा झूठा समाचार शामिल हैं। परन्तु यह सब इन्सानी मन की गलत धारणाएँ (**परमेश्वर**, दिव्य **मन** के विचारों के विरूद्ध) हैं, जिन्हें नष्ट करने की ज़रूरत है ताकि सब मुक्त हो सकें।

यह प्रत्यक्ष है कि बताए गए बाइबल के प्रसिद्ध व्यक्तियों ने नाराज़गी या स्वंय को उचित सिद्ध करने को दृश्य में आने की अनुमति नहीं दी। अनुग्रह तथा प्रेम ने उन व्यक्तियों की चेतना को प्रत्यक्ष रूप से भर दिया था; अन्यथा शायद वे कभी अपने संघर्षों में से विजयी हो कर नहीं निकल पाते।

अपराध भावना वह है जो पहली बार बाइबल में उत्पत्ति के दूसरे अध्याय में पाई गई, जिस में पुरूष तथा स्त्री की रचना भौतिक रूप से की गई। उन चरणों में निजी शक्ति तथा प्रभाव अनियंत्रित हैं तथा दोष की अँगुली हर तरफ इशारा करती है। एक पूर्णः प्रमाणित उपाय है कि एडम तथा ईव की इस कहानी को झूठा मानें तथा बजाए इस के उत्पत्ति के पहले वर्णन पर ध्यान दें, जहाँ पर पुरूषों तथा स्त्रियों की रचना **परमेश्वर** के रूप तथा प्रतिरूप में की गई थी–दोषरहित, सरल, मासूम तथा निरापराध। इस मूल वर्णन में कोई गलत आरोप विद्यमान नहीं है। इस में कोई पीड़ित नहीं है, घोर पापी नहीं है, झूठे आरोपी नहीं हैं। बल्कि चर्चा में ईर्ष्या, अन्याय या बुराई बिल्कुल भी प्रवेश नहीं करती।

आज कल बहुत से लोग जिन के साथ अन्याय किया जाता है वे स्वंय को पीड़ित महसूस करते हैं। वैबस्टर के शब्दकोश में पीड़ित की एक परिभाषा है,"धार्मिक अनुष्ठान के दौरान दी गई एक जीवित बलि"। अगर किसी ने बिना सोचे समझे स्वीकार कर लिया है कि हम सब बाहरी परिस्थितियों की वजह से पीड़ित हैं जिन पर हमारा कोई वश नहीं है, यह धारणा उलटाई जा सकती है, इस आध्यात्मिक तथ्य को अच्छी तरह समझ कर कि **परमेश्वर** ने हमें अपने प्रतिरूप में बनाया है। हम दिव्य **सिद्धांत** को प्रतिबिम्बित करते हैं। **परमेश्वर** ने पीड़ित नहीं केवल विजयी बनाए हैं।

अंधकारमय अकसर छिपी हुई प्रवृतियाँ जो कि अन्याय का मूल कारण हैं, उन में, **सत्य** की विद्यमानता की चमक में कोई ताकत नहीं रहती। अंधेरे के अस्त्र प्रकाश को जख्मी नहीं कर सकते तथा **परमेश्वर** के बेटे और बेटियाँ **उसके** प्रकाश और महिमा की उपस्थिति में जीते हैं। हम में से हर कोई "सर्वोच्च के गुप्त स्थान" में रहता है, जहाँ कोई गलत आरोप न हमें खोज सकता है और न ही छू सकता है। (भजनसंहिता 91:1) यह दिव्य **प्रेम** से भरा हुआ एक मानसिक निवास स्थान है, जहाँ पर गलत आरोपों तथा गलत अनुमानों के लिए कोई कमरा नहीं है कि वो अपना घर बना सके। **परमेश्वर** के साथ अपनी एकता का दावा करते हुए हम अपनी स्वंय की शेरों की माँद या तपती हुई भट्टी, या कोई और बंधक दर्दनाक अनुभव में से गुज़र सकते हैं तथा प्रफुल्लित, प्रेरित, शुद्ध रूप में प्रकट होंगे। जैसे कि मेरी बेकर ऐडी ने लिखा है, "वही परिस्थिति जिसे तुम्हारी पीड़ित सोच कष्टदायक तथा पीड़ादायक समझती है, उसी में **प्रेम** एक फरिश्ते को अज्ञात रूप से प्रवेश करवा सकता है।" (सायँस एंड हैल्थ – 574)

सबसे शान्त जगह तूफान की आँख में होती है। वैसे ही, कठिनाइयों के ठीक बीच में, हम बुराई से सुरक्षा, बचाव का दावा कर सकते हैं, तथा **परमेश्वर** के प्रिय बच्चों की तरह अपनी दिव्य विरासत को स्वीकार कर सकते हैं। यही वह जगह है जहाँ क्राइस्ट–**परमेश्वर** की कोमल उपस्थिति प्रकट होती है।

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मुझे याद है, कुछ वर्ष पहले मैंने एक प्रतियोगिता के बारे में पढ़ा था जिस में चित्रकारों को शांति के विषय पर सचित्र व्याख्या करने के लिए आमंत्रित किया गया। उस में बहुत लोगों ने भाग लिया तथा यह उम्मीद की गई कि एक विशेष चित्र विजयी घोषित होगा। इस ने एक सुन्दर शांत दृश्य को चित्रित किया–एक गाँव की कुटिया जिसकी चिमनी से निकलता हुआ छल्लेदार धूआँ, एक नदी से पानी पीती गायें, और हरा–भरा जंगल। लेकिन न्यायाधीशों ने उस चित्र को पहला इनाम दिया जिसमें चट्टानों के ऊपर ज़ोरदार प्रवाह से तीव्र पानी का झरना चित्रित किया गया था जिसकी फुहारें चारों ओर फैल रही थीं।

पहली नज़र में न्यायाधीशों के चुनाव को समझना बहुत कठिन था। परन्तु यदि तुम उस चित्र को और नज़दीकी से देखते, तुम देख सकते थे कि झरने के पीछे एक छोटी चट्टान पर बैठी गाती हुई एक छोटी चिड़िया। न्यायाधीशों ने कहा कि उन के लिए गाँव का चित्र ठहराव को चित्रित करता है, जब कि झरने के चित्र ने वास्तविक शांति को प्रस्तुत किया। उन्होंने शांति की व्याख्या अपनी चट्टान पर बैठने तथा गाने की योग्यता के द्वारा की, चाहे आपके आस पास कुछ भी हो रहा हो।

क्या उदाहरण है! मेरे लिए यह कहता है कि कोई फर्क नहीं कि सामने कैसा अन्याय है, हम में से हर एक में सभी परिस्थितियों में अपनी चट्टान पर बैठने तथा **परमेश्वर** की शक्ति और उपस्थिति के स्तुति गान गाने की योग्यता है, ठीक तीव्र प्रवाह के बीच अपनी सम्पूर्ण सुरक्षा को खुशी से मान्यता देते हुए।

अपनी चट्टान को खोजने तथा कठिन स्थितियों में गाने के लिए, मैंने कुछ निर्देशों का पालन करने को सहायक पाया:–

- पहली आज्ञा का पालन करो तथा **परमेश्वर** के अलावा किसी और शक्ति या उपस्थिति को मानयता न दो

- **सत्य** तथा **प्रेम** पर केन्द्रित हो जाओ ताकि कोई डराने वाले, क्रोधित, प्रतिशोध लेने वाले या घातक विचार प्रवेश न कर पाएं।

- जान लो कि "दाता परमेश्वर सर्वशक्तिमान शासन करता है"–सभी परस्थितियों में, सब जगह। (प्रकाशितवाक्य 19:6)

- घटनाओं को बदलने के लिए **परमेश्वर** की शक्ति में प्रसन्नता से भरोसा करो।

अन्याय, सत्य की तीव्र धारा वाली, अंदर जाने वाली तथा शुद्ध करने वाली शक्ति में अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकता। यह अनिवार्य रूप में दिव्य न्याय की समझ को समपर्ण कर देता है। इसे जान कर कितना आश्वासन मिलता है कि बाइबल का यह आशीष हम में से हर एक पर सहज भाव से लागू होता है, "दाता का प्रियजन उस की बगल में सुरक्षा से वास करेगा और दाता उसे सारा दिन अपनी छाया में रखेगा और वह उस के कंधों के बीच वास करेगा।" (व्यवस्थाविवरण 33:12)

Translation © 2012 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.